दि0 जैन अतिशय क्षेत्र बीनाजी (बारहा) देवरी, जि0

म०प्र० के बुंदेलखंड की परम पावन धरती पर प्रसिद्ध दिगंबर जैन प्राचीन अतिशय क्षेत्र बीनाजी (बारहा) है। जो कि सुख–चैन नदी के समीप, अपनी भव्यता एवं आकर्षण लिए विशेष, दिव्य, अद्भुत स्थान माना जाता है। तो आइये, दर्शन कर अपने जीवन को सफल बनाएँ। अपने श्रेष्ठ जीवन में आलोकिक अविस्मरणीय यादों को संजोकर सुखद जीवन शैली को ऊर्जावान बनाने में सहयोग करें।

चातुर्मास सेवा समिति के प्रमुख संयोजक संजय जैन मेक्स, अध्यक्ष महेन्द्र बजाज, उप संयोजक ऋषभ मोदी ने जानकारी देते हुए बताया कि संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद से सुखद मनोहारी क्षेत्र पर विशाल गगनचुम्बी शिखरों से युक्त तीन जिनालय हैं। शांतिनाथ जिनालय में आकर्षक कायोत्सर्ग मुद्रा में 1008 भगवान श्री शांतिनाथ जी की अतिशययुक्त 16 फुट उत्तंग प्रतिमा के दर्शन करने से श्रद्धालु भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं परिसर में साठ खंबो को सुशोभित कर वंशी पहाड़पुर पत्थर का 135x70 फीट का हॉल का निर्माण कार्य चल रहा है जिसमें बाहर से ही शांतिनाथ भगवान के दर्शन का लाभ मिल रहा है। मंदिर के बाह्य भाग की तीन दिशाओं में देशी पाषाण पर कलाकृति से परिपूरित प्रतिमाएँ विरामान हैं जिनका कलात्मक सौन्दर्य अति मनोज्ञ है।

मामा–भानेज के नाम से प्रसिद्ध मंदिर का वंशी पहाड़पुर के लाल पत्थरों से जीर्णोद्वार किया जा रहा है। इस जिनालय में 13 फुट ऊँची 12 फुट 4 इंच चौड़ी पद्मासन चूने और मिट्टी से निर्मित भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा भी अपनी ओर सभी को आकर्षित करती है। गर्भगृह में भी देशी पाषाण से निर्मित 6 फुट 9 इंच की भगवान चंद्रप्रभु की प्रतिमा मौजूद है। यहाँ पर भी 16 फुट ऊँचे भव्य द्वार से विराट रूप लिए चमत्कारी प्रतिमा के दर्शन लाभ बाहरी परिसर से भी ले सकते हैं। मामा भानेज के मंदिर के उर्ध्व भाग में तीन अष्ट धातु की 51 इंच व 39 इंच की प्रतिमा भी विराजमान हो रही हैं। क्षेत्र परिसर में जिनालय आकर्षक कलाकृति की दृष्टि से बेजोड़ उदाहरण है। विश्व का एकमात्र गंधकुटी जिनालय है जिसकी ऊँचाई 61 फुट उत्तुंग लाल पत्थर आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। जो दर्शनार्थियों का मन मोह लेता है। इसमें भी चारअष्ट धातु की प्रतिमा विराजमान होना है। गुरू के साथ भगवान के दर्शन करने का विशेष लाभ भी मिलता है क्योंकि हमारा तन–मन गुरूचरणों में समर्पित रहता है व चंचल मन कभी भी भटक नहीं पाता।

क्षेत्र का अतिशयः इस संबंध में यह अनुश्रुति है कि एक धर्मात्मा जैन गाँव–गाँव जाकर बंजी (व्यापार) करते हुए अपनी आजीविका चलाता था। इस हेतु ही वह बीनाग्राम में भी आता था। रास्ते में एक स्थान पर उसे प्रायः ठोकर लगती थी। एक रात उसे स्वप्न आया कि जहाँ तुम्हें ठोकर लगती है, वहाँ खोदने से श्री शान्तिनाथ भगवान की मूर्ति के दर्शन होंगे। अतः उसने 2 दिन खुदाई की। तीसरे दिन पुनः स्वप्न आया कि तुम जहाँ मूर्ति स्थापित करना चाहते हो, वहीं ले जाकर रूकना और इस बीच पीछे मुड़कर नहीं देखना, अन्यथा भगवान वहीं रूक जाएँगे। वह श्रावक तीसरे दिन गया और खोदने पर उसे शान्तिनाथ भगवान की मूर्ति के दर्शन हुए। दर्शन पा वह भक्ति में ओतप्रोत हो गया। प्रभु चरणों में लीन हो गया।

भगवान को छोटी, ठठेरे (हल्की लकड़ी) की गाड़ी में बैठाकर आगे बढ़ा तो उसे जय–जयकार व संगीत का नाद सुनाई दे रहा था। फलतः उससे रहा न गया और कोतूहलवश उसने पीछे मुड़कर देख ही लिया तो गाड़ी वहीं रूक गई। यह वही स्थान है, जहाँ शान्तिनाथ भगवान विराजमान हैं। बीना बारहा अतिशय क्षेत्र है और भी एक ऐसा अतिशय शान्तिनाथ भगवान का है कि एक चम्मच घी से पूरी रात दीपक जलना–जैसे अनेक अतिशय हैं, जो क्षेत्र की चमत्कारिता की यशोगाथा गाते हैं। अतः क्षेत्र प्राचीन, अतिशयकारी, मनोज्ञ व दर्शनीय है। क्षेत्र पर दयोदय गौशाला भी स्थापित है।

इस युग के महान् तपस्वी, प्रातः स्मरणीय, विश्ववंदनीय सतशिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का पदार्पण अनेक बार इस क्षेत्र का महान सौभाग्य है। सन् 1978 में आचार्यश्री जी के ससंघ मंगलमय सान्निध्य में ऐतिहासिक पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव हुआ था। आचार्यश्री जी इस क्षेत्र पर अनेक बार शीतयोग, ग्रीष्म योग में भी विराजित हुए हैं। हम सभी के परम सौभाग्य से वर्ष 2005 में आचार्यश्री एवं संघस्थ 50 मुनिराजों के वर्षायोग का सौभाग्य श्री इस क्षेत्र को प्राप्त हुआ है। आचार्य गुरुदेव का क्षेत्र के विकास हेतु मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त है और इससे क्षेत्र ने उल्लेखनीय प्रगति की है। क्षेत्र ने अत्यधिक भव्य एवं आकर्षक स्वरूप प्राप्त कर भारत वर्ष के तीर्थक्षेत्रों में विशिष्ट जगह बनाई है। यह सब आचार्य गुरुवर के मंगल आशीर्वाद की ही कृपा है। आचार्य श्री विद्यासागरजी द्वारा 'स्तुति–शतक' की रचना यहाँ पूर्ण कर इस क्षेत्र के विषय

दिल्ली से सागर

गाड़ी का नाम	गाड़ी नं.	कहां से	कहां तक	दिन
जम्मू-तवी जबलपुर ए. रात्रि	बृहस्पतिवार	1450	नई दिल्ली से 2.50 दिन में सागर	2.15
हीराकुण्ड एक्सप्रेस सायं		8508 सोम, वीर, रवि	8.10 बजे सुबह	6.40
एम.पी. सम्पर्क क्रांति सुबह		2122 सोम. गुरू. शनि	निजामुद्दीन से 5.25 सायं	3.20

सागर से दिल्ली

जम्मू-तवी जबलपुर ए. दिल्ली 10.30 रात्रि	मंगलवार	1449	सागर से 10.50 सुबह	न इ
हीराकुण्ड एक्सप्रेस बजे दिन में		8507 बुध, शनि, रवि	4.25 बजे सुबह	2.00
एम.पी. सम्पर्क क्रांति सुबह निजामुद्दीन	बुध, शुक्र, रवि	2121	10.50 रात्रि	9.10
गोडवाना एक्सप्रेस सुबह		2411 प्रतिदिन	8.20 रात्रि	7.25